Edit with WPS Office

रुके न तू (कविता)

मौखिक

1• इस कविता के रचयिता का नाम लिखिए ।

उ - इस कविता के रचयिता का नाम हरिवंशराय बच्चन है।

2• कवि किसके समान जलने के लिए कह रहा है ?

उ - कवि ज्योति के समान जलने के लिए कह रहा है ।

3• धनुष उठाकर क्या करना है ?

उ - धनुष उठाकर प्रहार करना है ।

Edit with WPS Office

लिखित (क) लघु उत्तरीय प्रश्न

1• कवि किसकी विजय की बात कर रहा है ?

उ - कवि योद्धा के विजय की बात कर रहा है ।

2• धरा हिलाने से कवि का क्या तात्पर्य है ?

उ - योद्धा ऐसा कार्य करे जिससे कि सारी दुनिया के लोग उसकी कीर्ति को जाने।यही धरती हिलाना है ।

3• भुजाएँ फड़कने से क्या होता है ?

उ - भुजाएँ फड़कने से योद्धा युद्ध के

Edit with WPS Office

लिए तैयार हो जाते हैं।

अतिरिक्त प्रश्न

1 • किसकी विजय निश्चित रूप से होती है ?

उ - जो व्यक्ति मार्ग में आने वाली तमाम बाधाओं को बिना रुके और बिना थके पार कर जाते हैं। उनकी ही विजय निश्चित रूप से होती है ।

2• कवि योद्धा को किसके समान सजग होने के लिए कहता है ?

उ- कवि योद्धा को हिरण की तरह

Edit with WPS Office

सजग होने के लिए कहता है ।

3• इस कविता में कवि क्या कहना चाहता है ?

उ - जो लोग अपने कर्तव्यपथ पर पूरी ईमानदारी, निष्ठा और मेहनत के साथ आगे बढ़ते हैं ,वे अवश्य ही सफल होते हैं।

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1• कवि द्वारा यह कहना कि 'तू पहला वार कर ' इससे आप क्या क्या समझते हैं ?

उ - 'तू पहला वार कर ' इससे कवि यह

Edit with WPS Office

कहना चाहते हैं कि योद्धा दुश्मन के आक्रमण करने से पहले ही उस पर धावा बोल दे।यानी वह दुश्मन को किसी भी तरह से कोई मौका न दे।

2• कभी न रुकना और कभी न थकना - इसका भाव यह है कि योद्धा हमेशा अपने कर्तव्यपथ पर पूरी लगन और निष्ठा के साथ आगे बढ़ता रहे।वह इस मार्ग पर चलते हुए कभी भी हार न माने ।यदि वह इस तरह कार्य करेगा तो निश्चित रूप से सफल होगा ।

Edit with WPS Office

3• कविता में कवि ने मनुष्य को अग्नि के समान धधकने के लिए क्यों कहा है ?

उ - कविता में कवि ने मनुष्य को अग्नि के समान धधकने के लिए कहा है क्योंकि जिस प्रकार अग्नि अपने रास्ते में पड़ने वाली समस्त चीजों को जला देती है।उसी तरह कार्य में लगा हुआ मनुष्य अपने मार्ग की सभी बाधाओं को मिटा देता है ।

4• कविता का मूलभाव अपने शब्दों में लिखिए ।

Edit with WPS Office

उ - प्रस्तुत कविता में कवि यह कहना चाहते हैं कि यदि कोई मनुष्य अपनी पूरी लगन , निष्ठा व मेहनत से आगे बढ़ता है ,तो विजयी अवश्य होता है।

कवि कहता है कि हे कार्यरत योद्धा तू ऐसा कार्य कर जिससे सारी दुनिया के लोग तुझे जानें।तेरे मार्ग में जितनी भी कठिन बाधाएँ आएँ, उसे तू पार कर जा।ऐसा करने पर तेरी विजय निश्चित है।तू ज्योति के समान जल और दुश्मन को अग्नि के समान जला दे।तेरी भुजाएँ संघर्ष से लड़ने के लिए तैयार रहे और तुझमें वीररस का संचार हो।

Edit with WPS Office

तू दुश्मन से मुकाबला करने के लिए हमेशा तैयार रह और उसके आक्रमण से पहले तू धावा बोल दे ।तू हिरण के समान सचेत होकर दुश्मन पर नजर बनाए रख।तू दुश्मन को कँपा देने के लिए शेर के समान दहाड़ ।अपने साथियों को एकजुट करने और उन्हें भयभीत करने के लिए शंख के समान पुकार कर ।

तू किसी भी परिस्थिति में न रुक और न ही थक।तू किसी भी तरह से हार मत मान और हमेशा कर्तव्यपथ पर चलता रह।

Edit with WPS Office